

ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की दशा अपेक्षाकृत श्रेष्ठ, सम्मानजनक और स्वतंत्र थी। समाज में उन्हें पुरुषों के समान अधिकार और प्रतिष्ठा प्राप्त थी। नीचे मुख्य बिंदुओं में इस स्थिति का वर्णन किया गया है—

1. शिक्षा और ज्ञान

स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करने का पूर्ण अधिकार था।

कई विदुषी स्त्रियाँ जैसे घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा, विश्ववारा आदि ऋग्वेद की ऋषिकाएँ मानी जाती हैं, जिन्होंने स्वयं ऋचाओं की रचना की।

यह दर्शाता है कि स्त्रियाँ वैदिक अध्ययन और दर्शन में भी सक्रिय थीं।

2. धार्मिक और सामाजिक अधिकार

स्त्रियाँ धार्मिक अनुष्ठानों में पति के साथ बराबर भागीदार थीं।

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” जैसी धारणाएँ इसी काल में प्रचलित थीं।

यज्ञ, संतानोत्पत्ति और गृहस्थ जीवन में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती थी।

3. विवाह और पारिवारिक स्थिति

विवाह सामान्यतः स्वेच्छा और समानता पर आधारित था।

स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी, जिसमें कन्या स्वयं वर का चयन करती थी।

बहुपतित्व या बहुपत्नी प्रथा बहुत कम थी; सामान्यतः एक पत्नी का प्रचलन था।

विधवा विवाह और पुनर्विवाह के उदाहरण भी मिलते हैं।

4. आर्थिक और कानूनी स्थिति

स्त्रियाँ गृह की स्वामिनी मानी जाती थीं और संपत्ति पर उनका अधिकार था।

वे गाय, अनाज, भूमि जैसी संपत्तियों की मालकिन हो सकती थीं।

सामाजिक निर्णयों में उनका परामर्श लिया जाता था।

5. राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन

कुछ संदर्भों में स्त्रियों के सभा और समिति जैसी संस्थाओं में भाग लेने के उल्लेख मिलते हैं।

इसका अर्थ है कि वे केवल गृहकार्य तक सीमित नहीं थीं, बल्कि सामाजिक निर्णयों में भी सहभागी थीं।

6. निष्कर्ष

ऋग्वैदिक युग में स्त्रियाँ:

शिक्षित, स्वतंत्र और सम्मानित थीं,

धर्म और समाज में समान अधिकार रखती थीं,

और उनके व्यक्तित्व को पूर्ण मानवता और सामर्थ्य के साथ देखा जाता था।

बाद के वैदिक काल में ही यह स्थिति धीरे-धीरे कमजोर पड़ी और स्त्रियों की स्वतंत्रता सीमित होने लगी।